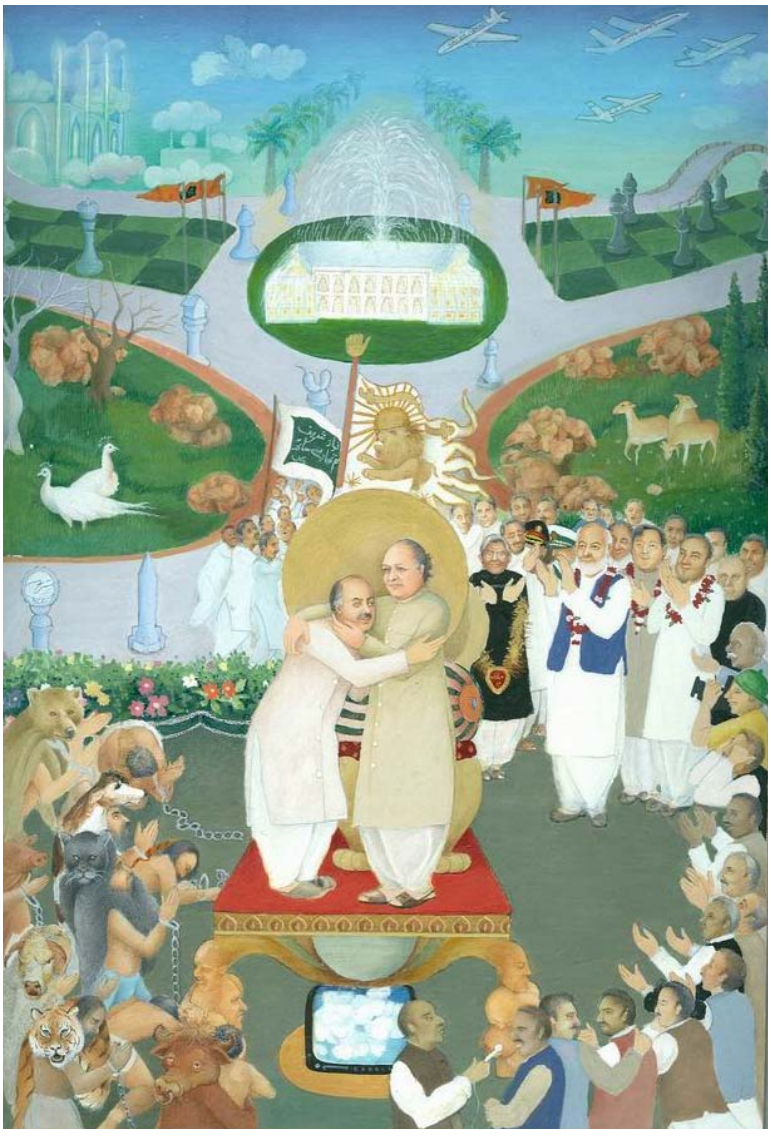

फोटोः आभार एशिया सोसायटी, वाशिंगटन डी.सी.

सायरा वसीम *पादशाहनामा, 1999 (तीन की श्रृंखला में से एक)*
वासली कागज (कागज की कई शीटों को एकसाथ चिपकाकर उन्हें रगड़ते हैं जब तक कि उनमें चमक और चिकनाई आ जाए) पर अपारदर्शी जलरंगों और स्वर्ण का काम।

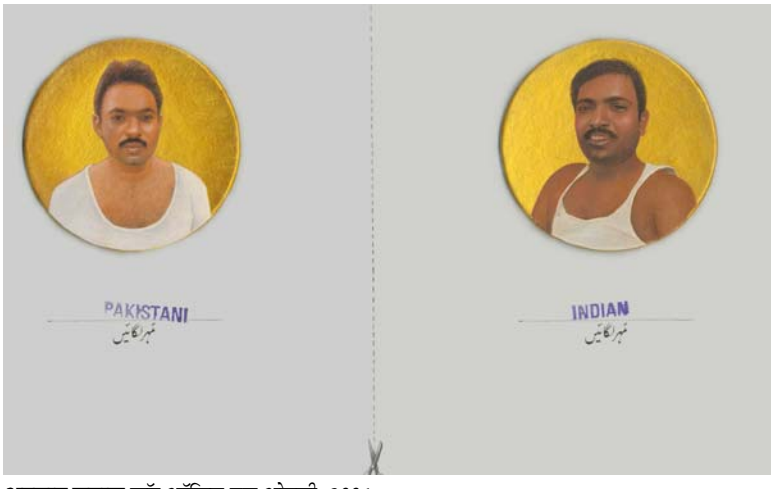

अहसान जमाल *फॉर ऑफिस यूज ओनली, 2004*
वासली और बोर्ड पर मिश्रित काम।

भारतीय और पाकिस्तानी

कलाकृतियां जिनमें छिपी है दास्तां

लिया टरह्यून

समकालीन दक्षिण एशियाई कलाकारों की कृतियों की वाशिंगटन डी.सी. में प्रदर्शनी।

चटख-शोख रंग और सूक्ष्म छटाएं, बहुत श्रम से रचे लघुचित्र और कैनवस और कागज पर बने बड़े बिंब - एशिया सोसायटी के वाशिंगटन केंद्र द्वारा आयोजित और कॅली बानिक द्वारा संग्रहीत ''पार्टिशन्स: एन एक्जिबिट ऑफ कंटेंपररी पेंटिंग्स फ्रॉम पाकिस्तान एंड इंडिया'' में इन सभी में दक्षिण एशियाई संस्कृति की झलक दिखी।

28 सितंबर से 26 अक्टूबर तक चली इस प्रदर्शनी का लक्ष्य इन दो देशों के ऐतिहासिक विभाजन की विवरण रचना नहीं बल्कि ''एक अधिक गहरे स्तर पर बंटवारे को समझना'' था। 1947 में ब्रिटेन से

स्वतंत्रता पाने के बाद हुए विभाजन से भड़की हिंसा में लाखों लोग मारे गए, हिंदू भागकर भारत आए, मुसलमान भागकर पाकिस्तान गए और अन्य बहुत से लोग एक अराजक संक्रमण में फंस गए। स्वतंत्रता की घोषणा के बाद के महीनों में बड़े पैमाने पर लोगों की अदला-बदली में परिवार बिछुड़ गए और एक करोड़ चालीस लाख से भी अधिक लोग विस्थापित हुए। दक्षिण एशियाई मानस पर लगे विभाजन के घाव अब भी पूरी तरह भरे नहीं हैं। सीमा के दोनों ओर के साहित्य और कला क्षेत्र में विभाजन के प्रभाव के विश्लेषण के अनवरत प्रयास इसके गवाह हैं।

वास्तुकार फर्म एचएनटीबी आर्किटेक्चर द्वारा प्रायोजित ''पार्टिशन्स'' प्रदर्शनी में शामिल कलाकारों ने भारतीय और पाकिस्तानी अनुभव के विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत किया है। पाकिस्तानी चित्रों में जहां राजनीतिक सरोकार हावी दिखे, वहीं भारतीय चित्रों में धार्मिक और आध्यात्मिक विषय। क्यूरेटर कॅली बानिक बताती हैं कि राजनीतिक बयान के लिए लघुचित्र शैली का उपयोग भारत की अपेक्षा पाकिस्तान में अधिक दिखता है। वह बताती हैं,'' पिछले चार सालों में दक्षिण एशिया में समकालीन कला आंदोलन काफी फैला है।'' इसीलिए उन्हें लगता है कि प्रदर्शनी ठीक समय पर आयोजित हुई । वह कहती हैं, ''वहां जो काम हो रहा है, उसमें लोगों की रुचि काफी बढ़ रही है।'' कॅली का उद्देश्य, ''भारत और पाकिस्तान में जो हो रहा है वह दिखाना .....और साझेपन की तुलना और उसकी खोज'' है।

राजस्थान भारत में लघुचित्रण का परम्परागत गढ़ रहा है। यहां के बाशिंदे छोटूलाल अपने देश के आध्यात्मिक आख्यानों से प्रेरणा पाते हैं। शरीर, मन और आत्मा के संबंध पर आधारित उनकी कृतियां उपनिषदों और भगवद्गीता के श्लोकों को एक आधुनिक परिप्रेक्ष्य देती हैं। ''द उल्टा ट्री''(2006), ''माइंड 1''(2005), ''माइंड 2''(2006), ''पावर ऑफ द सोल'' (2006)

हसनत महमूद,
बिना शीर्षक, 2006, वासली पर अपारदर्शी जलरंग और कागज का कोलाज।

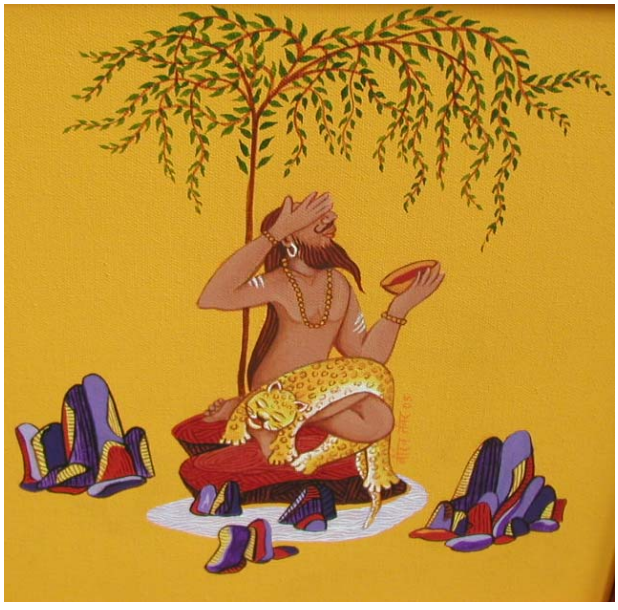

वीरेन तंवर
एवरी लाइफ हैज ए स्टोरी, 2006
(आंशिक दृश्य,पांच की श्रृंखला में से एक)
कैनवास और लकड़ी पर एक्रिलिक।

छोटू लाल
पॉवर ऑफ द सोल
2006, हाथ से बने कागज पर अपारदर्शी जलरंग

और ''डिवाइन डायमेंशन''(2006), सभी इसी विषय की पड़ताल करती हैं। कमलों से ढके ''अहं'' के ऊपर एक शार्दूल और राजपूत राजकुमार विराज रहे हैं। इन चित्रों में रंगों की सूक्ष्म छटाएं हैं और ज्यामितीय आकृतियों का उपयोग आकर्षक लगता है।

छोटूलाल की ही तरह रामेश्वर सिंह ने भी उदयपुर विश्वविद्यालय से स्नातक शिक्षा पाई है। कैनवस पर एक्रिलिक रंगों से बने उनके चित्रों के शोख- चटख लाल, हरे और पीले रंग भारत की लोक परंपरा से आए हैं। हिन्दू देवता गणेश पर उनकी चित्र श्रृंखला -''एन इनविटेशन टु ए वेडिंग'', ''श्री गणेश 1''(2006), ''श्री गणेश 2''(2006), - में सुंदर लिखावट और चमकीली रंगयोजना का सुघड़ उपयोग दिखता है। ''हॉर्स प्ले''(2006) और ''राधा विद फ्लावर्स''(2006) प्राचीन लोककला के बिम्बों -घोड़े, तोते, महिलाओं- को आधुनिक स्वरूप में उभारते हैं। हाथ से बने कागज को खास तौर से तैयार कर उस पर चित्रकारी की जाती है और फिर इसे विशेष रूप से जलाकर इन चित्रों में एक विशिष्ट प्रभाव पैदा किया जाता है।

लाहौर, पाकिस्तान की सायरा वसीम सिद्धहस्त लघु चित्रकार हैं। वह अपने कौशल का उपयोग राजनीतिक टिप्पणी करने के लिए करती हैं। उनकी कृतियां ''पादशाहनामा 1''(1999) और ''पादशाहनामा 2''(1999) मुगल शैली के लघुचित्र में भूतपूर्व पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ को हास्य के पात्र के रूप में प्रस्तुत करती हैं। इन चित्रों में प्रमुख पाकिस्तानी राजनीतिज्ञों, धर्मगुरुओं और सैन्य अधिकारियों को साफ-साफ पहचाना जा सकता है। ''पादशाहनामा 1'' में पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल परवेज मुशर्रफ को एक तिरछे प्रभामंडल के साथ दिखाया गया है।

''क्रिकेट मैच'' (2004) में भारत और पाकिस्तान के बीच चल रहा क्रिकेट मैच दोनों देशों

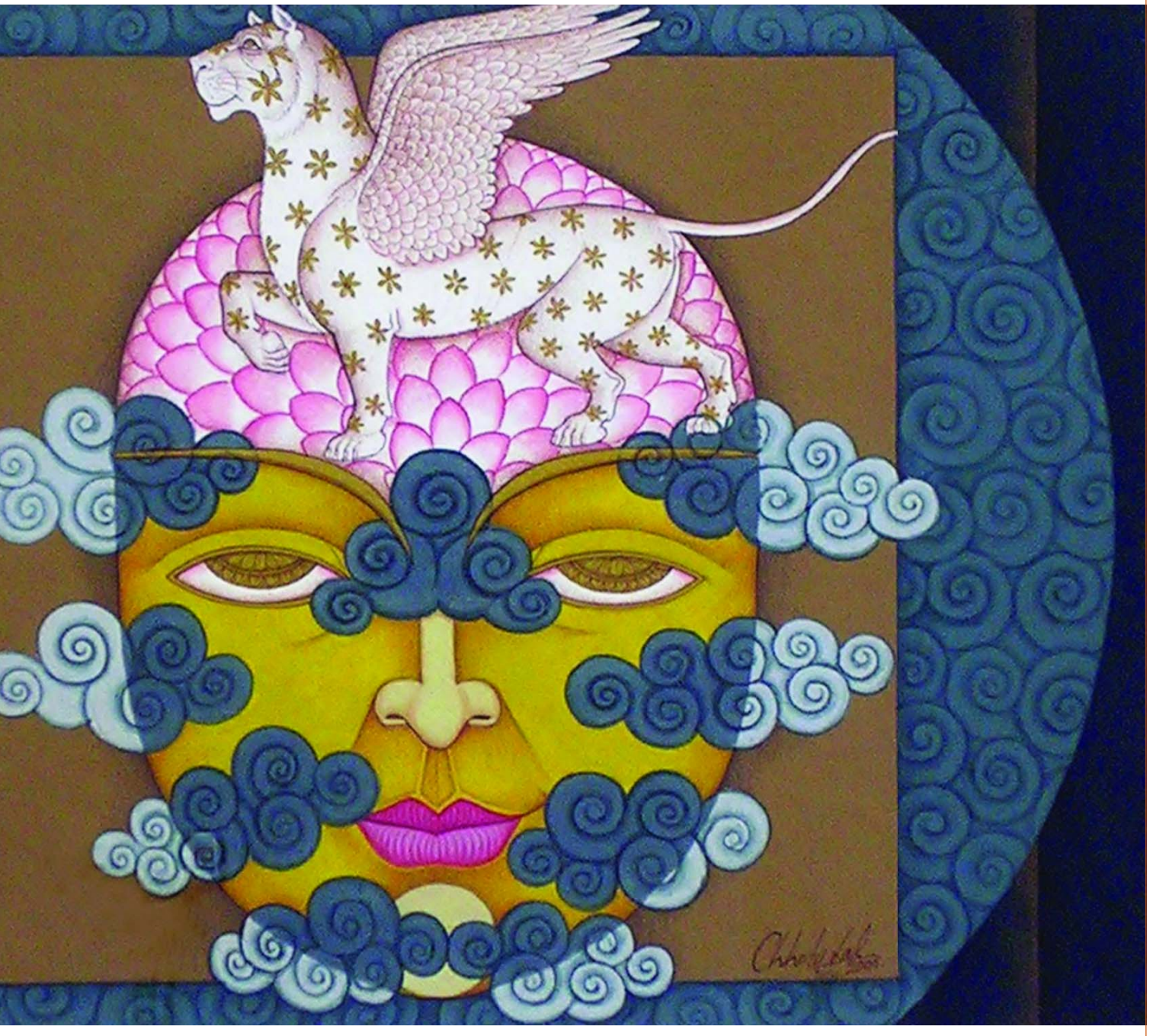

रामेश्वर सिंह
हॉर्स प्ले, 2006
कैनवास पर एक्रिलिक

के संबंधों का रूपक बन जाता है।

सायरा वसीम को विचारोत्तेजक विषयों की चित्रकार के रूप में जाना जाता है। उनकी एक और शृंखला ''ऑनर किलिंग्स'' के केंद्र में वे स्त्रियां हैं जिन्हें उनके परिवार वालों ने परिवार की इज्जत को बट्टा लगाने वाली घोषित करके मार डाला।

पाकिस्तान की कला-इतिहास विशेषज्ञ और समालोचक अतीका अली ने लिखा, ''सायरा हमारा ध्यान ऐसे विषयों की ओर खींचती हैं जिन पर (उन्हें लगता है कि) ज्यादातर लोग ध्यान नहीं दे रहे हैं। वह दर्शकों को मुद्दों पर संवाद के लिए आमंत्रित करती हैं।

''फॉर ऑफिस यूज ओनली 1-4'' में पाकिस्तानी चित्रकार अहसान जमाल मुगलशैली की शबीहों के माध्यम से बंटवारे पर टिप्पणी करते दिखते हैं - अपनी विशिष्ट पोशाकों में अपना काम करते एक भारतीय और एक पाकिस्तानी कामगार - सिपाही, रिक्शेवाला, फल-फरोश, दर्जी दर्शक को मैत्रीभाव से देख रहे हैं। विभाजन की व्यक्तिगत और राजनीतिक वास्तविकता की पृष्ठभूमि में साधारण दृश्य भी मन को गहरे छू लेते हैं।

झेलम, पाकिस्तान के हसनत महमूद लघुचित्र शैली के माध्यम से बहुत दक्षता से आधुनिक राजनीतिक और निजी विचारों को व्यक्त करते हैं। उनकी रचनाओं में त्वरित टिप्पणी का भाव रहता है, माध्यम की विविधता भी उनके यहां दिखती है: ''निएंडरथल मैन''(2006) में सिलुएटों (छायाचित्रों) का और ''अनटाइटल्ड''(2006) में अखबारों की कतरनों या कविता की चिंदियों का अभिनव प्रयोग है। हसनत लाहौर के नेशनल कॉलेज ऑफ आर्ट्स में लघुचित्रण पढ़ाते हैं जो मुगलशैली के लघुचित्रण में डिग्री देने वाला एकमात्र संस्थान है। परंपरागत रूप से यह कला उस्ताद के साथ, उनकी देखरेख में रहते हुए सीखी जाती है।

भारतीय कलाकार वीरेन तंवर की शृंखला ''एवरी लाइफ हैज ए स्टोरी'' में कैनवस और लकड़ी पर एक्रिलिक रंगों का उपयोग किया गया है। तंवर वैसे तो बड़े आकार के कैनवसों के लिए जाने जाते हैं लेकिन इस प्रदर्शनी के लिए उन्होंने छोटे आकार के कैनवस तैयार किए। उनके चित्रों में प्रेमियों की मुलाकात, गुरू और शिष्यों का संवाद जैसी औसत जीवन की घटनाएं केंद्रीय विषय हैं। तंवर की टिप्पणी है, ''जीवन भरपूर जिया जाना चाहिए और अपनी कहानी लिखनी चाहिए - यही जीवन का उद्देश्य है। हर जीवन एक कहानी कहता है!''

कॅली बानिक कहती हैं, ''ये कलाकार दक्षिण एशिया के बाहर बहुत प्रसिद्ध नहीं हैं।'' वैसे सायरा वसीम और हसनत महमूद की कृतियां न्यूयॉर्क की गैलरियों में प्रदर्शित हो चुकी है - दक्षिण एशिया की कला की लोकप्रियता इस क्षेत्र में बढ़ रही है।

कला व्यापारी सदबीज ऑक्शन हाउस का कहना है कि हाल की नीलामियों में दक्षिण एशियाई कलाकारों की कृतियों का औसत मूल्य 50 से 70 हजार डॉलर के बीच रहा। बहुत विख्यात कलाकारों की कृतियां और भी मंहगी बिकीं। वाशिंगटन की रहने वाली कॅली बनिक की कला में गहरी रूचि है जिसके चलते उन्होंने पहली बार किसी प्रदर्शनी की क्यूरेटर बनने की जिम्मेदारी उठाई। उनकी इच्छा है कि अमेरिका की राजधानी में दक्षिण एशियाई कला की और भी प्रदर्शनियां हों।

लिया टरह्यून *यूएसइनफो की कार्यालय लेखिका और स्पैन की पूर्व संपादक हैं। वह वाशिंगटन डी.सी. में रहती हैं।*